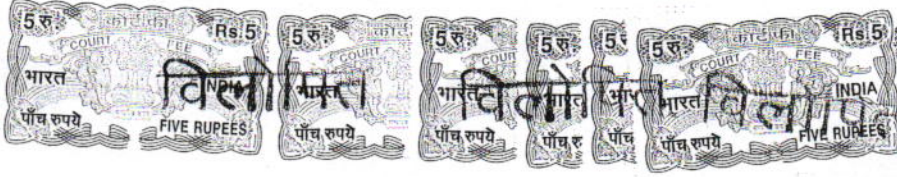


11/3 - 1780 - III-16

न्यायालय श्रीमान सदस्य महोदय राजस्व मण्डल ग्वालियर म.प्र.



राजेन्द्र प्रसाद पिता शोभालाल गुप्ता ग्राम मानपुर तहसील मानपुर जिला उमरियाआवेदक/पुनरीक्षणकर्ता

श्री. मंगल सिंह बंनारस

द्वारा आज दि. 4-3-16 इन्द्रजीत पिता रामरहसधारी गुप्ता निवासी- ग्राम मानपुर तहसील मानपुर जिला उमरियाअनावेदक

बलक अंगु 3-16
राजस्व मण्डल ग्वालियर

राजस्व पुनरीक्षण

पुररीक्षण विरुद्ध न्यायालय तहसीलदार मानपुर जिला उमरिया के आदेश पत्रिका दिनांक 23.02.2016 एवं 26.02.2016 जरिये प्रकरण क्रमांक 4 (अ) 70 2015-16 आदेश पत्रिका दिनांक 23.02.2016 व 26.02.2016 अंतर्गत धारा 50 म.प्र. भू.राजस्व संहिता 1959

मान्यवर,

पुनरीक्षण का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि :- ग्राम मानपुर तहसील मानपुर जिला उमरिया के आ. खसरा नम्बर 721/7 रकवा 0.072

राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता

vXXXa BR H-11

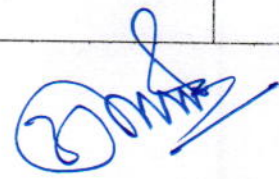
राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर

राजेन्द्र / इन्द्रजीत

प्रकरण क्रमांक निग0 780-तीन/16

जिला - उमरिया

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
05-03-2016	<p>आवेदक द्वारा यह निगरानी तहसीलदार, मानपुर जिला उमरिया के प्रकरण क्रमांक 4 (अ) 70/2015-16/बी-121 में आदेश पत्रिका दिनांक 23-2-2016 से असंतुष्ट होकर इस न्यायालय में प्रस्तुत की है ।</p> <p>प्रकरण का संक्षिप्त तथ्य इस प्रकार है । आवेदक द्वारा तहसीलदार मानपुर जिला उमरिया खसरा नं0 721/7 रकवा 0.072 के भूमि स्वामी होने के आधार पर अनावेदक के विरुद्ध धारा- 250 (1) व धारा -250 (3) के तहत आवेदन पेश किया तथा विवादस्पद आराजी पर मकान बनाने का कार्य अनावेदक द्वारा करने के कारण उसके विरुद्ध स्थगन आदेश हेतु आवेदन प्रस्तुत किया । तहसीलदार द्वारा दिनांक 7-11-15 को आगामी पेशी तक स्थगन जारी किया । आवेदक अभिभाषक द्वारा तक दिया गया कि दिनांक 26-2-16 को तहसीलदार के न्यायालय में स्थगन अवधि बढ़ाये जाने का आवेदन प्रस्तुत किया । परन्तु तहसीलदार द्वारा स्थगन आवेदन पर कोई आदेश नहीं करते हुए प्रकरण तर्क हेतु नियत कर दिया गया । तहसीलदार के आदेश दिनांक 26-2-2016 के आवलोकन से यह प्रकट होता है कि तहसीलदार ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत स्थगन आवेदन पर कोई</p>	



निर्णय नहीं किया तथा प्रकरण आवेदक अभिभाषक के तर्क करने के अनुरोध पर तर्क हेतु निश्चित किया है । इससे यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि तर्क किस आवेदन पर सुने जाने हैं । अतः प्रकरण इस निर्देश के साथ प्रत्यावर्तित किया जाता है कि तहसीलदार आवेदक द्वारा प्रस्तुत स्थगन आवेदन पर उभयपक्ष के तर्क सुनकर आदेश करें । तत्पश्चात् प्रकरण का गुणदोषों के आधार पर निराकरण करें ।



61
सदस्य